Ehtiraame Muslim (Hindi)

एहतिरामे मुस्लिम

शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल

मुह़म्मद इल्यास अ़त्त़ार क़ादिरी र-ज़वी دامت برکاتہم العالیہ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ़ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले । (المُستطرف ج ۱ ص ۴۰ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

एह़तिरामे मुस्लिम

येह रिसाला (**एह़तिरामे मुस्लिम**)

शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने **उर्दू** ज़बान में तह़रीर फ़रमाया है ।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है और मक-त-बतुल मदीना से शाएअ़ करवाया है । इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल या SMS) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये ।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद
के सामने, तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

एह़तिरामे मुस्लिम[1]

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए सिर्फ़ (35 सफ़ह़ात) पर मुश्तमिल येह बयान मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَ اللہ عَزَّوَجَلَّ आप अपने दिल में म-दनी इन्क़िलाब बरपा होता हुवा मह़सूस फ़रमाएंगे ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

सरकारे मदीना صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने तक़र्रुब निशान है **:** ''क़ियामत के रोज़ लोगों में मेरे नज़्दीक-तर वोह होगा जिस ने मुझ पर ज़ियादा दुरूद शरीफ़ पढ़े होंगे ।'' (ترمذی ج۲ ص۲۷ حدیث۴۸٤)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

खोटा सिक्का

ह़ज़रते सय्यिदुना शैख़ अबू **अ़ब्दुल्लाह** ख़य्यात़ رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के पास एक आतश परस्त कपड़े सिलवाता और हर बार उजरत में **खोटा सिक्का** दे जाता, आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ चुपचाप ले लेते । एक बार आप رَحْمَۃُ اللہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ग़ैर मौजू-दगी में शागिर्द ने आतश परस्त से **खोटा सिक्का** न लिया । जब वापस तशरीफ़ लाए और मा'लूम हुवा तो शागिर्द

مدینہ

1 **:** येह बयान **अमीरे अहले सुन्नत** دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के तीन रोज़ा बैनल अक़्वामी इज्तिमाअ़ (11, 12, 13 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म 1423 सि.हि. बरोज़ हफ़्ता मदीनतुल औलिया मुलतान) में फ़रमाया, तरमीम के साथ तह़रीरन ह़ाज़िरे ख़िदमत है ।

-मजलिसे मक-त-बतुल मदीना

www.dawateislami.net

से फ़रमाया : तू ने खोटा दिरहम क्यूं नहीं लिया ? कई साल से वोह मुझे **खोटा सिक्का** ही देता रहा है और मैं भी जान बूझ कर ले लेता हूं ताकि येह वोही सिक्का किसी दूसरे मुसल्मान को न दे आए। (اِحیاءُ الْعُلوم ج۳ ص۸۷ مُلَخَّصاً)

दा'वते इस्लामी क्या चाहती है ?

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! पहले के बुज़ुर्गों में **एह़तिरामे मुस्लिम** का जज़्बा किस क़दर कूट कूट कर भरा हुवा होता था। किसी अनजाने मुसल्मान भाई को इत्तिफ़ाक़ी नुक़्सान से बचाने के लिये भी अपना ख़सारा गवारा कर लिया जाता था, जब कि आज तो भाई ही भाई को लूटने में मसरूफ़ है। तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक, **दा'वते इस्लामी** दौरे अस्लाफ़ की याद ताज़ा करना चाहती है। **''दा'वते इस्लामी''** नफ़रतें मिटाती और मह़ब्बतों के जाम पिलाती है। हर इस्लामी भाई को चाहिये कि आ़शिक़ाने रसूल के **म-दनी क़ाफ़िलों** में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना ''फ़िक्रे मदीना'' के ज़रीए़ **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के पहले दिन अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बनाए। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **एह़तिरामे मुस्लिम** का जज़्बा बेदार होगा। अगर ऐसा हो गया तो اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हमारा मुआ़-शरा एक बार फिर **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا के दिलकश व ख़ुश गवार, ख़ुश्बूदार व सदा बहार रंग बिरंगे फूलों से लदा हुवा ह़सीन गुलज़ार बन जाएगा।

त़यबा के सिवा सब बाग़ पामाले फ़ना होंगे
देखोगे चमन वालो जब अ़हदे ख़ज़ां आया

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

तीन शख़्स जन्नत से (इब्तिदाअन) महरूम

वालिदैन व दीगर ज़विल अरहाम (या'नी जिन के साथ ख़ूनी रिश्ता हो द-रजा ब द-रजा) मुआ़-शरे में सब से ज़ियादा एह़तिराम व हुस्ने सुलूक के ह़क़दार होते हैं, मगर अफ़्सोस कि इस की त़रफ़ अब ध्यान कम दिया जाता है । बा'ज़ लोग अ़वाम के सामने अगर्चे इन्तिहाई मुन्कसिरुल मिज़ाज व मिलन-सार गर्दाने जाते हैं मगर अपने घर में बिल ख़ुसूस वालिदैन के ह़क़ में निहायत ही तुन्द मिज़ाज व बद अख़्लाक़ होते हैं । ऐसों की तवज्जोह के लिये अ़र्ज़ है, ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से रिवायत है, सरकारे दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : "तीन शख़्स जन्नत में नहीं जाएंगे, मां बाप को सताने वाला और दय्यूस और मर्दानी वज़्अ़ बनाने वाली औ़रत ।" (مَجْمَعُ الزَّوائِد ج۸ ص۲۷۰ حدیث۱۳٤۳۲)

दय्यूस की ता'रीफ़

बयान कर्दा ह़दीसे पाक में मां बाप को ईज़ा देने वाले के साथ साथ **दय्यूस** के बारे में भी वईद है कि वोह जन्नत से महरूम कर दिया जाएगा । "दय्यूस" या'नी वोह शख़्स जो अपनी बीवी या किसी महरम पर ग़ैरत न खाए । (دُرِّمُختار ج٦ ص١١٣) मत़लब येह कि **बा वुजूदे कुदरत अपनी ज़ौजा, मां, बहनों और जवान बेटियों वग़ैरा को गलियों बाज़ारों, शॉपिंग सेन्टरों और मख़्लूत़ तफ़रीह़ गाहों में बे पर्दा घूमने फिरने, अजनबी पड़ोसियों, ना महरम रिश्तेदारों, ग़ैर महरम मुलाज़िमों, चोकीदारों और ड्राइवरों से बे तकल्लुफ़ी और बे पर्दगी से मन्अ़ न करने वाले दय्यूस, जन्नत से महरूम और जहन्नम के**

ह़क़दार हैं।

याद रखिये ! दीगर ना महरमों के साथ साथ तायाज़ाद, चचाज़ाद, मामूंज़ाद, ख़ालाज़ाद, फूफीज़ाद, चची, ताई, मुमानी, बहनोई, ख़ालू और फूफा नीज़ देवर व जेठ और भाभी के दरमियान भी शरीअ़त ने पर्दा रखा है। अगर औ़रत मज़्कूरा रिश्तेदारों से बे तकल्लुफ़ रहेगी और इन से शर-ई पर्दा नहीं करेगी तो जहन्नम की ह़क़दार है और शोहर अपनी इस्तिता़अ़त के मुत़ाबिक़ बीवी को इस गुनाह से नहीं रोकेगा तो शर-अ़न वोह "दय्यूस" इब्तिदाअन जन्नत से मह़रूम और अ़ज़ाबे नार का मुस्तह़िक़ है। जो अ़लानिया **दय्यूस** है वोह फ़ासिक़े मो'लिन, ना क़ाबिले इमामत व मर्दूदुश्शहादह (या'नी गवाही के लिये ना लाइक़) है।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के पहले दिन अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बनाइये। اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ बे ह़याई का मरज़ **दय्यूसी** और दीगर गुनाहों के अमराज़ भी उन मीठे मीठे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के सदक़े में दूर होंगे जिन की ह़या से झुकी हुई मुबारक निगाहों का वासित़ा पेश करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه बारगाहे रब्बुल इ़ज़्ज़त में अ़र्ज़ करते हैं :

या इलाही ! रंग लाएं जब मेरी बे बाकियां
उन की नीची नीची नज़रों की ह़या का साथ हो

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मर्दाना लिबास वाली जन्नत से महरूम

ह़दीसे पाक में मर्दानी वज़्अ़ बनाने वाली औ़रत को भी जन्नत से महरूम क़रार दिया गया है। तो जो औ़रत मर्दाना लिबास, या मर्दाना जूते पहने या मर्दाना त़र्ज़ के बाल कटवाए वोह भी इस वईद में दाख़िल है। आज कल बच्चों में इस बात का कोई लिह़ाज़ नहीं रखा जाता, लड़के को लड़की का लिबास पहना दिया जाता है जिस से वोह लड़की मा'लूम होता है जब कि लड़की को مَعَاذَاللّٰہِ عَزَّوَجَلَّ लड़के का लिबास म-सलन पेन्ट शर्ट, लड़के के जूते और हेट वग़ैरा पहना देते हैं, बाल भी लड़के जैसे रखवाए जाते हैं कि देखने में बिल्कुल लड़का मा'लूम होती है। **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی लिखते हैं : "बच्चों के हाथ पाउं में बिला ज़रूरत मेहंदी लगाना ना जाइज़ है। औ़रत ख़ुद अपने हाथ पाउं में लगा सकती है मगर लड़के को लगाएगी तो गुनहगार होगी।"

(बहारे शरीअ़त, जि. 3, स. 428)

अपने बच्चों को ऐसे बाबासूट भी मत पहनाइये जिन पर इन्सान या जानवर की तस्वीर बनी हो, बच्चों को नेल पॉलिश भी न लगाइये और बच्चों की मां भी हरगिज़ न लगाए कि नेल पॉलिश लगी होने की सूरत में उस के नीचे नाख़ुन पर पानी नहीं बहता, लिहाज़ा वुज़ू व ग़ुस्ल नहीं होता।

बड़े भाई का एह़तिराम

वालिदैन के साथ साथ दीगर अहले ख़ानदान म-सलन भाई

बहनों का भी ख़याल रखना चाहिये। वालिद साहिब के बा'द दादाजान और बड़े भाई का रुत्बा है कि बड़ा भाई वालिद की जगह होता है। मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, ताजदारे रिसालत, साहिबे जूदो सख़ावत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "बड़े भाई का ह़क़ छोटे भाई पर ऐसा है जैसे वालिद का ह़क़ औलाद पर।"

(شُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص٢١٠ حدیث٧٩٢٩)

औलाद को अदब सिखाइये

वालिदैन को भी चाहिये कि अपनी औलाद के ह़ुक़ूक़ का ख़याल रखें, इन्हें मॉडर्न बनाने के बजाए सुन्नतों का चलता फिरता नमूना बनाएं, इन के अख़्लाक़ संवारें, बुरी सोह़बत से दूर रखें, सुन्नतों भरे **म-दनी माह़ोल** से वाबस्ता करें। फ़िल्मों डिरामों, गाने बाजों और बुरे रस्मो रवाजों से भरपूर, यादे ख़ुदा व मुस्त़फ़ा से दूर करने वाले फ़ोह़ूश फ़ंक्शनों से बचाएं। आज कल शायद मां बाप औलाद के ह़ुक़ूक़ येही समझते हैं कि इन को दुन्यवी ता'लीम मिल जाए, हुनर और माल कमाना आ जाए। आह! अपने लख़्ते जिगर के लिबास और बदन को मैल कुचैल से बचाने का तो ज़ेह्न होता है मगर बच्चे के दिलो दिमाग़ और आ'माल व अफ़्आ़ल की पाकीज़गी का कोई ख़याल नहीं होता। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने वाला निशान है : "कोई शख़्स अपनी औलाद को अदब सिखाए वोह उस के लिये एक साअ़[1] स-दक़ा करने से अफ़्ज़ल है।"

1 : या'नी तक़्रीबन चार किलो ग़ल्ला।

www.dawateislami.net

(ترمذی ج ۳ ص ۳۸۲ حدیث ۱۹۵۸) और इर्शाद है कि "किसी बाप ने अपनी औलाद को कोई चीज़ ऐसी नहीं दी जो अच्छे अदब से बेहतर हो ।"

(اَیضاً ص۳۸۳ حدیث۱۹۵۹)

घरों में म-दनी माह़ोल न होने की एक वज्ह

अफ़्सोस ! आज कल हम में से अक्सर के घरों में **म-दनी माह़ोल** बिल्कुल नहीं है । इस में काफ़ी ह़द तक हमारा अपना भी क़ुसूर है । घर वालों के साथ हमारी बे इन्तिहा बे तकल्लुफ़ी, हंसी मज़ाक़, तू तड़ाक़ और बद अख़्लाक़ी और ह़द द-रजा बे तवज्जोही वग़ैरा इस के अस्बाब हैं । आ़म लोगों के साथ तो हमारे बा'ज़ इस्लामी भाई इन्तिहाई आ़जिज़ी और मिस्कीनी से पेश आते हैं मगर घर में शेरे बबर की त़रह़ दहाड़ते हैं, इस त़रह़ घर में वक़ार क़ाइम होता ही नहीं और अहले ख़ाना बेचारे इस्लाह़ से अक्सर मह़रूम रह जाते हैं । ख़बरदार ! अगर आप ने अपने अख़्लाक़ न संवारे, घर वालों के साथ आ़जिज़ी और ख़न्दा पेशानी का मुज़ा-हरा कर के इन की इस्लाह़ की कोशिश न की तो कहीं जहन्नम में न जा पड़ें । **अल्लाह तबा-र-क व तआ़ला** पारह 28 **सू-रतुत्तह़रीम** की आयत 6 में इर्शाद फ़रमाता है :

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِيْكُمْ نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : ऐ ईमान वालो ! अपनी जानों और अपने घर वालों को उस आग से बचाओ जिस के ईंधन आदमी और पथ्थर हैं ।

अहले ख़ाना को दोज़ख़ से कैसे बचाएं ?

इस अयाते करीमा के तह़्त **ख़ज़ाइनुल इरफ़ान** में है :

अल्लाह तआ़ला और उस के रसूल صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर के, इ़बादतें बजा ला कर, गुनाहों से बाज़ रह कर घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमा-न-अ़त कर के और उन्हें इ़ल्मो अदब सिखा कर (अपनी जानों और अपने घर वालों को जहन्नम की आग से बचाओ)

रिश्तेदारों का एह़तिराम

तमाम रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव करना चाहिये। ह़ज़रते सय्यिदुना आ़सिम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "जिस को येह पसन्द हो कि उ़म्र में दराज़ी और रिज़्क़ में फ़राख़ी हो और बुरी मौत दफ़्अ़ हो वोह **अल्लाह तआ़ला** से डरता रहे और रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक करे।"

(اَلْمُستَدرَك ج٥ ص٢٢٢ حديث٧٣٦٢)

मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए़ बज़्मे हिदायत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : "रिश्ता काटने वाला जन्नत में नहीं जाएगा।" **(بُخاری ج٤ ص٩٧ حديث٥٩٨٤)**

रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक के म-दनी फूल

सिलए रेह़मी के मा'ना

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त ह़िस्सा (16)**" सफ़ह़ा 201 ता 203 पर है : **सिलए रेह़म** के मा'ना **रिश्ते को जोड़ना** है या'नी रिश्ते वालों के साथ नेकी और सुलूक करना। सारी उम्मत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि **सिलए रेह़म** वाजिब है और क़त़्ए़ रेह़म (या'नी रिश्ता तोड़ना) ह़राम है।

किन रिश्तेदारों से सिला वाजिब है ?

जिन रिश्ते वालों के साथ सिला (रेह़म) वाजिब है वोह कौन हैं ? बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया : वोह **ज़ू रेह़म मह़रम** हैं और बा'ज़ ने फ़रमाया : इस से मुराद ज़ू रेह़म हैं, मह़रम हों या न हों। और ज़ाहिर येही क़ौले दुवुम है, **अह़ादीस** में मुत़्लक़न (या'नी बिग़ैर किसी क़ैद के) रिश्ते वालों के साथ सिला (या'नी सुलूक) करने का हुक्म आता है, क़ुरआने मजीद में मुत़्लक़न (या'नी बिला क़ैद) ज़विल क़ुर्बा (या'नी क़राबत वाले) फ़रमाया गया मगर येह बात ज़रूर है कि रिश्ते में चूंकि मुख़्तलिफ़ द-रजात हैं (इसी त़रह़) सिलए रेह़म (या'नी रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) के द-रजात में भी तफ़ावुत (या'नी फ़र्क़) होता है। वालिदैन का मर्तबा सब से बढ़ कर है, इन के बा'द ''ज़ू रेह़म मह़रम'' का, (या'नी वोह रिश्तेदार जिन से न-सबी रिश्ता होने की वज्ह से निकाह़ हमेशा के लिये ह़राम हो) इन के बा'द बक़िय्या रिश्ते वालों का अ़ला क़दरे मरातिब। (या'नी रिश्ते में नज़्दीकी की तरतीब के मुत़ाबिक़) (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۷۸)

''ज़ू रेह़म मह़रम'' और ''ज़ू रेह़म'' से मुराद ?

मुफ़स्सिरे शहीर, **ह़कीमुल उम्मत**, ह़ज़रते मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان **सू-रतुल ब-क़रह** की आयत 83 وَبِالْوَالِدَيْنِ اِحْسَانًا وَّذِی الْقُرْبٰی ''**तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान :** और मां बाप के साथ भलाई करो और रिश्तेदारों से।'' के तह़्त ''तफ़्सीरे नईमी'' में लिखते हैं : और **क़ुर्बा** ब मा'ना क़राबत है या'नी अपने अहले क़राबत के साथ एह़सान करो, चूंकि अहले क़राबत का रिश्ता मां बाप के ज़रीए से होता है और इन का एह़सान भी मां बाप के मुक़ाबले में कम है इस लिये

इन का ह़क़ भी मां बाप के बा'द है, इस जगह भी चन्द हिदायतें हैं : **पहली हिदायत : ज़िल क़ुर्बा** वोह लोग हैं जिन का रिश्ता ब ज़रीए़ मां बाप के हो जिसे "ज़ी रेह़म" भी कहते हैं, येह तीन त़रह़ के हैं : **एक** बाप के क़राबत दार जैसे दादा, दादी, चचा, फूफी वग़ैरा, **दूसरे** मां के जैसे नाना, नानी, मामूं, ख़ाला, अख़्याफ़ी (या'नी जिन का बाप अलग अलग हो और मां एक हो ऐसे भाई और बहन का) भाई वग़ैरा, **तीसरे** दोनों के क़राबत दार जैसे ह़क़ीक़ी भाई बहन। इन में से जिस का रिश्ता क़वी होगा उस का ह़क़ मुक़द्दम। **दूसरी हिदायत :** अहले क़राबत दो क़िस्म के हैं **एक** वोह जिन से निकाह़ ह़राम है, इन्हें ज़ी रेह़म मह़रम (या'नी ऐसा क़रीबी रिश्तेदार कि अगर इन में से जिस किसी को भी मर्द और दूसरे को औ़रत फ़र्ज़ किया जाए तो निकाह़ हमेशा के लिये ह़राम हो जैसे बाप, मां, बेटा, बेटी, भाई, बहन, चचा, फूफी, मामूं, ख़ाला, भान्जा, भान्जी वग़ैरा) कहते हैं, जैसे चचा, फूफी, मामूं, ख़ाला वग़ैरा। ज़रूरत के वक़्त इन की ख़िदमत करना फ़र्ज़ है न करने वाला गुनहगार होगा। **दूसरे** वोह जिन से निकाह़ ह़लाल जैसे ख़ाला, मामूं, चचा की औलाद इन के साथ एह़सान व सुलूक करना सुन्नते मुअक्कदा है और बहुत सवाब लेकिन हर क़राबत दार बल्कि सारे मुसल्मानों से अच्छे अख़्लाक़ के साथ पेश आना ज़रूरी और इन को ईज़ा पहुंचानी ह़राम। (تفسیرعزیزی) **तीसरी हिदायत :** सुसराली दूर के रिश्तेदार ज़ी रेह़म नहीं, हां इन में से बा'ज़ मह़रम हैं जैसे सास और दूध की मां, बा'ज़ मह़रम भी नहीं, इन के भी हुक़ूक़ हैं यहां तक कि पड़ोसी के भी ह़क़ हैं मगर येह लोग इस आयत में दाख़िल नहीं क्यूं कि यहां रेह़मी और रिश्ते वाले मुराद हैं। (तफ़्सीरे नईमी, जि. 1, स. 447)

www.dawateislami.net

रिश्तेदार दूसरे मुल्क में हों तो क्या करे ?

अगर येह शख़्स परदेस में है तो रिश्ते वालों के पास ख़त़ भेजा करे, इन से ख़त़ो किताबत जारी रखे ताकि बे तअ़ल्लुक़ी पैदा न होने पाए और हो सके तो वत़न आए और रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात ताज़ा कर ले, इस त़रह़ करने से मह़ब्बत में इज़ाफ़ा होगा । (رَدُّالْمُحتار ج٩ ص٦٧٨) फ़ी ज़माना राबित़ा निहायत आसान है, ख़त़ पहुंचने में काफ़ी देर लगती, हो सके तो फ़ोन और ई-मेइल के ज़रीए भी राबित़ा रखा जा सकता है कि येह भी इज़्दियादे हुब (या'नी मह़ब्बत बढ़ाने) के ज़राएअ़ हैं ।

क़त़्ए रेह़्म की एक सूरत

जब अपना कोई रिश्तेदार कोई ह़ाजत पेश करे तो उस की ह़ाजत रवाई करे, इस को रद कर देना क़त़्ए रेह़्म (या'नी रिश्ता काटना) है । (دُرَر، ص٣٢٣) याद रहे ! **क़त़्ए रेह़्म** या'नी रिश्ता काटना **ह़राम** है ।

सिलए रेह़्म येह है कि वोह तोड़े तब भी तुम जोड़ो

सिलए रेह़्मी (रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक) इसी का नाम नहीं कि वोह सुलूक करे तो तुम भी करो, येह चीज़ तो ह़क़ीक़त में मुकाफ़ात या'नी अदला बदला करना है कि उस ने तुम्हारे पास चीज़ भेज दी तुम ने उस के पास भेज दी, वोह तुम्हारे यहां आया तुम उस के पास चले गए । ह़क़ीक़तन **सिलए रेह़्म** (या'नी कामिल द-रजे का रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक) येह है कि वोह काटे और तुम जोड़ो, वोह तुम से जुदा होना चाहता है, बे ए'तिनाई (या'नी ला परवाही) करता है और तुम उस के साथ रिश्ते के ह़ुक़ूक़ की मुराआ़त (या'नी लिह़ाज़ व रिआ़यत) करो । (رَدُّالْمُحتار ج٩ ص٦٧٨)

www.dawateislami.net

नाराज़ रिश्तेदारों से सुल्ह़ कर लीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मेरी आप से म-दनी इल्तिजा है कि अगर आप की किसी रिश्तेदार से नाराज़ी है तो अगर्चे रिश्तेदार ही का क़ुसूर हो सुल्ह़ के लिये ख़ुद पहल कीजिये और ख़ुद आगे बढ़ कर ख़न्दा पेशानी के साथ उस से मिल कर तअ़ल्लुक़ात संवार लीजिये । हां अगर कोई शर-ई मस्लह़त मानेअ़ (या'नी रुकावट) है तो बेशक सुल्ह़ न की जाए । **आ़शिक़ाने रसूल** के म-दनी क़ाफ़िलों में सुन्नतों की तरबिय्यत के लिये सुन्नतों भरा सफ़र और रोज़ाना फ़िक्रे मदीना के ज़रीए़ **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के पहले दिन अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰه تَعَالٰى ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **एह़तिरामे मुस्लिम** का आप के अन्दर वोह दर्द पैदा होगा कि तमाम रूठे हुए रिश्तेदारों से न सिर्फ़ सुल्ह़ हो जाएगी बल्कि वोह اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से भी वाबस्ता हो जाएंगे ।

सब शकर रन्जियां दूर होंगी मियां
क़ाफ़िले में चलें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

यतीम के सर पर हाथ फेरने की फ़ज़ीलत

जिस बच्चे या बच्ची का बाप फ़ौत हो जाए उस को **यतीम** कहते हैं । जब बच्चा बालिग़ या बच्ची बालिग़ा हो गई तो अब यतीम के अह़काम ख़त्म हुए । यतीमों के साथ हुस्ने सुलूक का भी बड़ा सवाब

है । चुनान्चे रसूले करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने अ़ज़ीम है : ''जो शख़्स **यतीम** के सर पर मह़ज़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के लिये हाथ फेरे तो जितने बालों पर उस का हाथ गुज़रा हर बाल के मुक़ाबिल में उस के लिये नेकियां हैं और जो शख़्स **यतीम** लड़की या **यतीम** लड़के पर एह़सान करे मैं और वोह जन्नत में (दो उंग्लियों को मिला कर फ़रमाया) इस त़रह़ होंगे ।''

(مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج۸ ص۲۷۲ حدیث۲۲۲۱۵)

यतीम के सर पर हाथ फेरने और मिस्कीन को खाना खिलाने से दिल की सख़्ती दूर होती है । चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अबू हुरैरा** رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि एक शख़्स ने अपने दिल की सख़्ती की शिकायत की । **नबिय्ये रह़मत**, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''यतीम के सर पर हाथ फेरो और मिस्कीन को खाना खिलाओ ।''

(ایضاً ج۳ ص۳۳۵ حدیث۹۰۲۸)

बेचैन दिलों के चैन, रह़मते दारैन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''लड़का यतीम हो तो उस के सर पर हाथ फेरने में आगे की त़रफ़ ले आए और बच्चे का बाप हो तो हाथ फेरने में गरदन की त़रफ़ ले जाए ।''

(مُعْجَم اَوْسَط ج۱ ص۳۵۱ حدیث۱۲۷۹)

औ़रत से निभाने की कोशिश कीजिये

मर्द को चाहिये कि अपनी ज़ौजा के साथ ह़ुस्ने सुलूक करे । और उस को ह़िक्मते अ़-मली के साथ चलाए । चुनान्चे **मीठे मीठे आक़ा** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ह़िक्मत निशान है : ''बेशक औ़रत पसली से पैदा की गई है तुम्हारे लिये किसी त़रह़ सीधी नहीं हो सकती अगर तुम इस से नफ़्अ़ चाहते हो तो इस के टेढ़े पन के साथ ही नफ़्अ़ ह़ासिल कर

सकते हो और अगर इस को सीधा करने लगोगे तो तोड़ डालोगे और इस का तोड़ना त़लाक़ देना है।'' (مُسلِم ص۷۷۵ حدیث۱٤٦۸)

ज़ौजा के साथ नरमी की फ़ज़ीलत

मा'लूम हुवा कुछ न कुछ ख़िलाफ़े मिज़ाज ह़-र-कतें इस से सरज़द होती ही रहेंगी। मर्द को चाहिये कि सब्र करता रहे। नबियों के सरवर, हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, महबूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रूह़ परवर है : ''कामिल ईमान वालों में से वोह भी है जो उ़म्दा अख़्लाक़ वाला और अपनी ज़ौजा के साथ सब से ज़ियादा नर्म त़बीअ़त हो।'' (ترمذی ج٤ص۲۷۸ حدیث۲٦۲۱)

औ़रत के साथ दर गुज़र का मुआ़-मला रखिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इस ह़दीसे पाक में उन लोगों के लिये दा'वते फ़िक्र है जो बात बात पर अपनी ज़ौजा को झाड़ते बल्कि मारते हैं। एक सिन्फ़े नाज़ुक पर क़ुव्वत का मुज़ा-हरा करना और ख़्वाह म ख़्वाह रो'ब झाड़ना मरदानगी नहीं। अगर्चे औ़रत की भूल हो तब भी दर गुज़र से काम लेना चाहिये कि जब औ़रत से कसीर मनाफ़ेअ़ भी ह़ासिल होते हैं तो उस की नादानियों पर सब्र भी करना चाहिये। नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''मोमिन मर्द मोमिना औ़रत से दुश्मनी नहीं रख सकता। अगर इस की एक ख़स्लत बुरी लगेगी तो दूसरी पसन्द आ जाएगी।'' (مُسلِم ص۷۷۵ حدیث۱٤٦۹)

नमक ज़ियादा डाल दिया

कहते हैं : एक आदमी की बीवी ने खाने में **नमक ज़ियादा डाल दिया।** इसे **ग़ुस्सा** तो बहुत आया मगर येह सोचते हुए वोह **ग़ुस्से**

को पी गया कि मैं भी तो ख़त़ाएं करता रहता हूं अगर आज मैं ने बीवी की ख़त़ा पर सख़्ती से गिरिफ़्त की तो कहीं ऐसा न हो कि कल बरोज़े क़ियामत **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी मेरी ख़त़ाओं पर गिरिफ़्त फ़रमा ले । चुनान्चे उस ने दिल ही दिल में अपनी ज़ौजा की ख़त़ा मुआ़फ़ कर दी । इन्तिक़ाल के बा'द उस को किसी ने ख़्वाब में देख कर पूछा, **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने आप के साथ क्या मुआ़-मला फ़रमाया ? उस ने जवाब दिया कि गुनाहों की कसरत के सबब अ़ज़ाब होने ही वाला था कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने फ़रमाया : मेरी बन्दी ने सालन में **नमक** ज़ियादा डाल दिया था और तुम ने उस की ख़त़ा **मुआ़फ़** कर दी थी, जाओ मैं भी उस के सिले में तुम को आज **मुआ़फ़** करता हूं ।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत और हर माह **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के जम्अ़ करवाने की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم घरेलू शकर रन्जियां दूर होंगी और आप का घर ख़ुशियों का गहवारा बनेगा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप के ख़ानदान को **मदीनए मुनव्वरह** زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا का नज़ारा नसीब होगा ।

सोया हुवा नसीब जगा दीजिये हुज़ूर मीठा मदीना मुझ को दिखा दीजिये हुज़ूर

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

शोहर के हुक़ूक़

बीवी को भी चाहिये कि अपने शोहर के साथ नेक सुलूक करे । चुनान्चे मीठे मीठे आक़ा, मदीने वाले **मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ख़ुश्बूदार है : "क़सम है उस की जिस के क़ब्ज़ए क़ुदरत में मेरी

जान है, अगर क़दम से सर तक शोहर के तमाम जिस्म में ज़ख़्म हों जिन से पीप और कच–लहू (या'नी पीप मिला ख़ून) बहता हो फिर अ़ौरत उसे चाटे तब भी ह़क़्क़े शोहर अदा न किया।" (مُسندِ اِمام احمد بن حنبل ج٤ ص٣١٨ حدیث١٢٦١٤)

शोहर का घर न छोड़े

बात बात पर रूठ कर मयके चली जाने वाली अ़ौरत इस ह़दीसे पाक को बार बार अपने कानों पर दोहराए और दिल की गहराइयों में उतारे, सरकारे मदीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : और (बीवी) बिग़ैर इजाज़त उस (या'नी शोहर) के घर से न जाए अगर (बिला ज़रूरत) ऐसा किया तो जब तक तौबा न करे या वापस लौट न आए **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और फ़िरिश्ते उस पर ला'नत करते हैं। (کَنْزُ الْعُمّال ج١٦ ص١٤٤ حدیث ٤٤٨٠١ مُلَخَّصاً)

अक्सर अ़ौरतें जहन्नमी होने का सबब

बा'ज़ ख़्वातीन अपने शोहरों की सख़्त ना फ़रमानियां और ना शुक्रियां करती हैं और ज़रा कोई बात बुरी लग जाए तो पिछले तमाम एह्‌सानात भुला कर कोसना शुरूअ़ कर देती हैं। जो इस्लामी बहनें बात बात पर ला'नत मलामत करती और फिटकार बरसाती रहती हैं उन को डर जाना चाहिये कि **सरकारे** नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم एक बार ईद के रोज़ ईदगाह तशरीफ़ ले जाते हुए ख़्वातीन की त़रफ़ गुज़रे तो फ़रमाया : "ऐ अ़ौरतो ! स–दक़ा किया करो क्यूं कि मैं ने अक्सर तुम को जहन्नमी देखा है।" ख़्वातीन ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! इस की वज्ह ? फ़रमाया : "इस लिये कि तुम ला'नत बहुत करती हो और अपने शोहर की ना शुक्री करती हो।"

(بُخاری ج١ ص١٢٣ حدیث٣٠٤)

www.dawateislami.net

पड़ोसियों की अहम्मिय्यत

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हर एक को चाहिये कि अपने पड़ोसियों के साथ अच्छा बरताव करे और बिला मस्लह़ते शर-ई इन के एह़तिराम में कमी न करे। एक शख़्स ने **हुज़ूर** सरापाए नूर, फ़ैज़ गन्जूर, शाहे ग़यूर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमते बा अ-ज़मत में अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! मुझे येह क्यूंकर मा'लूम हो कि मैं ने अच्छा किया या बुरा ? फ़रमाया : "जब तुम पड़ोसियों को येह कहते सुनो कि तुम ने अच्छा किया, तो बेशक तुम ने अच्छा किया और जब येह कहते सुनो कि तुम ने बुरा किया, तो बेशक तुम ने बुरा किया है।"

(اِبن ماجه ج٤ ص٤٧٩ حديث٤٢٢٣)

आ'ला किरदार की सनद

अल्लाहु अक्बर ! पड़ोसियों की इस क़दर अहम्मिय्यत कि "**केरेक्टर सर्टीफ़िकेट**" इन के ज़रीए मिले। अफ़्सोस ! फिर भी आज पड़ोसियों को कोई ख़ात़िर में नहीं लाता। आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र की सआ़दत और हर म-दनी माह **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के जम्अ़ करवाने की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पड़ोसियों की अहम्मिय्यत दिल में पैदा होगी और इन के एह़तिराम का ज़ेह्न बनेगा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ आप का मह़ल्ला बागे़ मदीना बन जाएगा।

बहार आए मह़ल्ले में मेरे भी या रसूलल्लाह
इधर भी तो झड़ी बरसे कोई रह़मत के बादल से

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

अमीरे क़ाफ़िला कैसा हो ?

सफ़र में जो अमीरे क़ाफ़िला हो उस को अपने रु-फ़क़ा का एह़तिराम और उन की बहुत ज़ियादा ख़िदमत करनी चाहिये। चुनान्चे **फ़रमाने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم : "सफ़र में वोही **अमीर** है जो उन की ख़िदमत करे, जो शख़्स ख़िदमत में बढ़ गया तो उस के रु-फ़क़ा किसी अ़मल में उस से नहीं बढ़ सकते हां अगर उन में से कोई शहीद हो जाए तो वोही बढ़ जाएगा।" (شُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص٣٣٤ حدیث٨٤٠٧)

बची हुई चीज़ें दूसरों को देने की तरग़ीब

एक मौक़अ़ पर सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सफ़र में इर्शाद फ़रमाया : "जिस के पास ज़ाइद सुवारी हो वोह बे सुवारी वाले को अ़त़ा कर दे और जिस के पास बची हुई ख़ूराक हो वोह बिग़ैर ख़ूराक वाले को खिला दे" और इसी त़रह़ दूसरी चीज़ों के मु-तअ़ल्लिक़ इर्शाद फ़रमाया। ह़ज़रते सय्यिदुना अबू सईद ख़ुदरी رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं : आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इसी त़रह़ माल की मुख़्तलिफ़ अक़्साम ज़िक्र फ़रमाईं ह़त्ता कि हम ने मह़सूस किया कि बची हुई चीज़ में से किसी को अपने पास रख लेने का ह़क़ ही नहीं है। (مُسلِم ص٩٥٢ حدیث١٧٢٨)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मा तह़तों के बारे में सुवाल होगा

एक अमीरे क़ाफ़िला ही नहीं, हर एक को अपने मा तह़तों के साथ हुस्ने सुलूक करना ज़रूरी है जैसा कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : "तुम में से हर एक **निगरान** है और निगरानी के

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

मु-तअ़ल्लिक़ सब से पूछगछ होगी **बादशाह** निगरान है, उस की रआ़या के बारे में उस से सुवाल होगा और **मर्द** अपने घर का निगरान है और उस की रआ़या के बारे में उस से सुवाल होगा और **औ़रत** अपने शोहर के घर में निगरान है और उस की रआ़या के बारे में उस से सुवाल होगा।"

(بُخاری ج۲ ص۱۱۲ حدیث۲۴۰۹)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िले में मुसल्सल सफ़र की सआ़दत और **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर माह जम्अ़ करवाने की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपने मा तह़्तों के एह़तिराम का वोह जज़्बा नसीब होगा कि اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ हर फ़र्द ख़ुश हो कर आप को "दुआ़ए मदीना" से नवाज़ा करेगा।

मैं दुन्या की दौलत का मंगता नहीं हूं

मुझे भाइयो ! दो दुआ़ए मदीना

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب!   صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

कामों की तक़्सीम

दौराने सफ़र किसी एक पर सारा बोझ डाल देने के बजाए कामों की आपस में तक़्सीम होनी चाहिये। चुनान्चे एक मर्तबा किसी सफ़र में सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने बकरी ज़ब्ह़ करने का इरादा किया और काम तक़्सीम कर लिया, किसी ने अपने ज़िम्मे ज़ब्ह़ का काम लिया तो किसी ने खाल उधेड़ने का नीज़ कोई पकाने का ज़िम्मेदार हो गया, सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया **:** लकड़ियां जम्अ़ करना

www.dawateislami.net

मेरे ज़िम्मे है। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان अ़र्ज़ गुज़ार हुए : आक़ा ! येह भी हम ही कर लेंगे। फ़रमाया : "येह तो मैं भी जानता हूं कि तुम येह काम (बख़ुशी) कर लोगे मगर मुझे येह पसन्द नहीं कि तुम लोगों में नुमायां रहूं और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ भी इस को पसन्द नहीं फ़रमाता।"

(خلاصة سير سيد البشر لمحب الدين الطبرى ص٧٥ ملخّصاً)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दूसरों को अपनी निशस्त पर जगह दीजिये

ट्रेन या बस वग़ैरा में अगर निशस्तें कम हों तो येह नहीं होना चाहिये कि बा'ज़ बैठे ही रहें और बा'ज़ खड़े खड़े ही सफ़र करें। होना येह चाहिये कि मौक़अ़ मह़ल की मुना-सबत से सारे बारी बारी बैठें और दूसरों के लिये अपनी निशस्त ईसार कर के सवाब कमाएं और सीट ईसार कर के इस सूरत में भी सवाब कमाया जा सकता है जब कि सीट की बुकिंग करवा रखी हो कि बुकिंग करवाने से ईसार करना कोई मन्अ़ नहीं हो जाता। ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه फ़रमाते हैं कि **ग़ज़्वए बद्र** में फ़ी ऊंट तीन अफ़राद थे। चुनान्चे ह़ज़रते अबू लुबाबा और ह़ज़रते अ़ली رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुवारी में शरीक थे। दोनों ह़ज़रात का बयान है कि जब सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की पैदल चलने की बारी आती तो हम दोनों अ़र्ज़ करते कि सरकार ! आप सुवार ही रहिये, हुज़ूर के बदले हम पैदल चलेंगे। इर्शाद होता : "तुम मुझ से ज़ियादा त़ाक़त वर नहीं हो और मैं ब निस्बत तुम्हारे सवाब से बे नियाज़ नहीं हूं।" (या'नी मुझ को भी सवाब चाहिये फिर मैं क्यूं पैदल न चलूं!)

(شرحُ السّنة ج٥ ص٥٦٦ حديث٢٦٨٠)

www.dawateislami.net

म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िले में मुसल्सल सफ़र की सआ़दत और **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह जम्अ़ करवाने की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم अपनी निशस्त दूसरों को पेश करने के लिये **ईसार का जज़्बा** पैदा होगा और इस की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ स-फ़रे ह़ज व दीदारे मदीना भी नसीब होगा और इस्नाए सफ़र भी मदीने के मुसाफ़िरों के लिये मिना शरीफ़, मुज़्दलिफ़ा शरीफ़, अ़-रफ़ात शरीफ़ और मक्कए मुकर्रमा व मदीनए मुनव्वरह زَادَھُمَااللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا में दीवानगी के साथ निशस्तें पेश करते रहने की सआ़दतें मिलती रहेंगी।

या रब ! सूए मदीना मस्ताना बन के जाऊं
उस शम्ए़ दो जहां का परवाना बन के जाऊं

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب ! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ज़ियादा जगह न घेरिये

इज्तिमाआ़त वग़ैरा में जहां लोग ज़ियादा हों वहां अपनी सहूलत के लिये ज़ियादा जगह घेर कर दूसरों के लिये तंगी का बाइ़स नहीं बनना चाहिये। चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना सह्ल बिन मुआ़ज़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا का बयान है, मेरे वालिदे गिरामी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि हम प्यारे आक़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के साथ जिहाद में गए तो लोगों ने मन्ज़िलें तंग कर दीं (या'नी ज़रूरत से ज़ियादा जगह घेर ली) और रास्ता रोक लिया। इस पर **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक आदमी को भेजा कि वोह

येह ए'लान करे, ''बेशक जो मन्ज़िलें तंग करे या रास्ता रोके तो उस का कुछ जिहाद नहीं।'' (ابوداؤد ج۳ ص۵۸ حدیث۲۶۲۹)

आने वाले के लिये सरक्ना सुन्नत है

जो लोग पहले से बैठे हों उन के लिये सुन्नत येह है कि जब कोई आए तो उस के लिये सरकें। ह़ज़रते सय्यिदुना वासिला बिन ख़त्ताब رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه से रिवायत है कि एक शख़्स ताजदारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मस्जिद में तशरीफ़ फ़रमा थे। रह़मते दो आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, रसूले मोह़तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم उस के लिये अपनी जगह से सरक गए। उस ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم! जगह कुशादा मौजूद है, (आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने सरक्ने की तक्लीफ़ क्यूं फ़रमाई!) फ़रमाया : ''मुसल्मान का ह़क़ येह है कि जब उस का भाई उसे देखे उस के लिये सरक जाए।'' (شُعَبُ الْاِیمان ج٦ ص٤٦٨ حدیث٨٩٣٣)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल के म-दनी क़ाफ़िले में मुसल्सल सफ़र की सआ़दत और हर म-दनी माह **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के जम्अ़ करवाने की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم थोड़ी सी जगह में ब-र-कत होगी दूसरों के लिये सरक्ने की सुन्नत पर अ़मल का ज़ेह्न बनेगा और اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ **जन्नतुल बक़ीअ़** में कुशादा तरीन जगह नसीब होगी।

ज़ाहिदीने दुन्या भी रश्क करते आ़सी पर
मैं बक़ीए ग़रक़द में दफ़्न हो अगर जाता

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

www.dawateislami.net

दूसरों से छुपा कर बात करना

ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** बिन मस्ऊ़द رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه का बयान है कि रसूले अकरम, रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम, शाहे बनी आदम, नबिय्ये मोह़्तशम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जब तुम तीन हो तो दो शख़्स तीसरे को छोड़ कर चुपके चुपके बातें न करें जब तक मजलिस में बहुत से लोग न आ जाएं, येह इस वज्ह से कि इस तीसरे को रन्ज पहुंचेगा।" (بُخاری ج٤ ص١٨٥ حدیث ٦٢٩٠) (कि शायद मेरे मु-तअ़ल्लिक़ कुछ कह रहे हैं या येह कि मुझे इस लाइक़ न समझा जो अपनी गुफ़्त-गू में शरीक करते वग़ैरा)

गरदन फलांगना

जो लोग जुमुआ़ को पहले से अगली सफ़ों में बैठ चुके हों, देर से आने वाले को उन की गरदनों को फलांगते हुए आगे बढ़ने की इजाज़त नहीं। चुनान्चे सरकारे मदीनए मुनव्वरह, सरदारे मक्कए मुकर्रमा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "जिस ने **जुमुआ़** के दिन लोगों की गरदनें फलांगीं उस ने जहन्नम की त़रफ़ पुल बनाया।" (ترمذی ج٢ ص٤٨ حدیث٥١٣) इस के एक मा'ना येह हैं कि उस पर चढ़ चढ़ कर लोग जहन्नम में दाख़िल होंगे। (ह़ाशियए बहारे शरीअ़त, जि. 1, स. 761, 762)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! नमाज़े जुमुआ़ के लिये जल्द मस्जिद में ह़ाज़िर हो जाना चाहिये, अगर देर हो गई, **ख़ुत़्बा** शुरूअ़ हो गया तो मस्जिद में जहां पहुंचा था वहीं रुक जाए एक क़दम भी आगे न बढ़े। मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ब ह़ालते ख़ुत़्बा चलना **ह़राम** है। यहां तक

उ़-लमाए किराम رَحِمَهُمُ اللهُ السَّلَام फ़रमाते हैं कि अगर ऐसे वक़्त आया कि ख़ुत्बा शुरूअ़ हो गया तो मस्जिद में जहां तक पहुंचा वहीं रुक जाए, आगे न बढ़े कि येह अ़मल होगा और ह़ाले ख़ुत्बा में कोई अ़मल रवा (या'नी जाइज़) नहीं। (फ़तावा र-ज़विय्या मुख़र्रजा, जि. 8, स. 333) मज़ीद फ़रमाते हैं : ख़ुत्बे में किसी त़रफ़ गरदन फेर कर देखना (भी) **ह़राम** है। (ऐज़न, स. 334)

दो के बीच में घुसना

अगर दो आदमी पहले से बैठे हों तो उन की इजाज़त के बिग़ैर उन के दरमियान जा घुसना सख़्त बद अख़्लाक़ी और **एह़तिरामे मुस्लिम** की सरासर ख़िलाफ़ वर्ज़ी है। चुनान्चे शहन्शाहे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने इ़ब्रत निशान है : "किसी शख़्स के लिये येह ह़लाल नहीं कि दो आदमियों के दरमियान उन की इजाज़त के बिग़ैर जुदाई कर दे।"[1] (या'नी उन की इजाज़त के बिग़ैर उन के दरमियान बैठ जाना ह़लाल नहीं) ह़ज़रते सय्यिदुना हुज़ैफ़ा رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه की रिवायत के मुत़ाबिक़ जो ह़ल्क़े के बीच जा बैठे ऐसा आदमी सरकारे दो आ़लम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़बानी **मल्ऊ़न** है।[2] **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का येह भी फ़रमान है कि एक शख़्स दूसरे को उस की जगह से उठा कर ख़ुद न बैठ जाए मगर बैठने वाले कुशा-दगी कर दिया करें। (مُسلِم ص١١٩٩ حديث٢١٧٧)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब, मुनज़्ज़हुन अ़निल उ़यूब صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : जो शख़्स अपनी मजलिस से उठे और फिर वापस आ जाए तो अपनी जगह का वोही ज़ियादा ह़क़दार है। (ایضاً حدیث٢١٧٩)

مدینہ

[1] ابوداؤد ج٤ ص٣٤٤ حدیث٤٨٤٥۔ [2] ترمذی ج٤ ص٣٤٦ حدیث ٢٧٦٢

www.dawateislami.net

सफ़ में चादर रख कर जगह रोकना

मेरे आक़ा **आ'ला ह़ज़रत**, इमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : कोई शख़्स मस्जिद में आया एक जगह बैठा फिर वुज़ू के लिये गया और अपना कपड़ा वहां छोड़ कर गया, दूसरा शख़्स उस कपड़े को उठा कर वहां न बैठे कि बैठने वाले का क़ब्ज़ा साबिक़ (या'नी पहले से) हो गया है । (मगर येह क़ब्ज़ा थोड़ी देर के लिये है जैसा कि आगे चल कर आ'ला ह़ज़रत फ़रमाते हैं :) ऐसा क़ब्ज़ा थोड़ी देर के लिये मुसल्लम (या'नी माना जाता) है जैसा (कि) कपड़ा रख कर वुज़ू को जाने में, न येह कि मस्जिद में अपनी कोई चीज़ रख दीजिये और वोह जगह हमेशा आप के लिये मख़्सूस हो जाए कि जब आइये दूसरों पर तक़्दीम (या'नी फ़ौक़िय्यत) पाइये, येह हरगिज़ न जाइज़ न मक़्बूल । (फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 16, स. 148)

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! आ़शिक़ाने रसूल के साथ म-दनी क़ाफ़िलों में मुसल्सल सुन्नतों भरे सफ़र की सआ़दत और हर म-दनी माह के पहले दिन **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के जम्अ़ करवाने की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ब तुफ़ैले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم मजलिस के आदाब, दूसरों की ह़क़ त-लफ़ियों और दिल आज़ारियों से इज्तिनाब और एह़तिरामे मुस्लिम बजा लाने का ज़ेह्न बनेगा और इस म-दनी तरबिय्यत की ब-र-कत से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ ह़ज व ज़ियारते मदीना का शरफ़ ह़ासिल होगा और वहां भी इन सुन्नतों पर अ़मल नसीब होगा ।

तेरे दीवाने सब, आएं सूए अ़रब

देखें सारे ह़रम, ताजदारे ह़रम

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

दिल न दुखाइये

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! एह़तिरामे मुस्लिम का तक़ाज़ा येह है कि हर ह़ाल में हर मुसल्मान के तमाम ह़ुक़ूक़ का लिह़ाज़ रखा जाए और बिला इजाज़ते शर-ई किसी भी मुसल्मान की दिल शि-कनी न की जाए। हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने कभी भी किसी मुसल्मान का दिल न दुखाया, न किसी पर त़न्ज़ किया, न किसी का मज़ाक़ उड़ाया न किसी को धुत्कारा न कभी किसी की बे इ़ज़्ज़ती की बल्कि हर एक को सीने से लगाया, बल्कि

लगाते हैं उस को भी सीने से आक़ा

जो होता नहीं मुंह लगाने के क़ाबिल

उस्वए ह़-सना

एह़तिरामे मुस्लिम बजा लाने के लिये हमें अपने प्यारे प्यारे आक़ा, मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के उस्वए ह़-सना को पेशे नज़र रखते हुए उस की पैरवी करनी होगी। पारह 21 **सू-रतुल अह़ज़ाब** आयत नम्बर 21 में इर्शाद होता है :

لَقَدْ كَانَ لَكُمْ فِيْ رَسُوْلِ اللّٰهِ اُسْوَةٌ حَسَنَةٌ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : बेशक तुम्हें **रसूलुल्लाह** की पैरवी बेहतर है।

अख़्लाक़े मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की झल्कियां

मीठे मीठे आक़ा, मक्के मदीने वाले मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم यक़ीनन तमाम मख़्लूक़ात में सब से ज़ियादा मुकर्रम, मुअ़ज़्ज़म और मोह़तरम हैं और हर ह़ाल में आप का एह़तिराम करना हम पर फ़र्ज़े आ'ज़म है । अब आप ह़ज़रात की ख़िदमत में सय्यिदुल मुर-सलीन, जनाबे रह़मतुल्लिल आ-लमीन صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के अख़्लाक़े ह़-सना की चन्द झल्कियां पेश करने की कोशिश करूंगा जो बिल ख़ुसूस **एह़तिरामे मुस्लिम** के लिये हमारी रहनुमा हैं ।

۞ सुल्त़ाने दो जहान صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हर वक़्त अपनी ज़बान की ह़िफ़ाज़त फ़रमाते और सिर्फ़ काम ही की बात करते ۞ आने वालों को मह़ब्बत देते, ऐसी कोई बात या काम न करते जिस से नफ़रत पैदा हो ۞ क़ौम के मुअ़ज़्ज़ज़ फ़र्द का लिह़ाज़ फ़रमाते और उस को क़ौम का सरदार मुक़र्रर फ़रमा देते ۞ लोगों को **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ख़ौफ़ की तल्क़ीन फ़रमाते ۞ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان की ख़बर गीरी फ़रमाते ۞ लोगों की अच्छी बातों की अच्छाई बयान करते और उस की तक़्वियत फ़रमाते, बुरी चीज़ को बुरी बताते और उस पर अ़मल से रोकते ۞ हर मुआ़-मले में ए'तिदाल (या'नी मियाना रवी) से काम लेते ۞ लोगों की इस्लाह़ से कभी भी ग़फ़्लत न फ़रमाते ۞ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم उठते बैठते (या'नी हर वक़्त) **ज़िक्रुल्लाह** करते रहते ۞ जब कहीं तशरीफ़ ले जाते तो जहां जगह मिल जाती वहीं बैठ जाते और दूसरों को भी इसी की तल्क़ीन फ़रमाते ۞ अपने पास बैठने वाले के ह़ुक़ूक़ का लिह़ाज़ रखते ۞ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर रहने वाले हर फ़र्द को येही मह़सूस होता कि सरकार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم मुझे सब से

ज़ियादा चाहते हैं ۞ ख़िदमते बा ब-र-कत में ह़ाज़िर हो कर गुफ़्त-गू करने वाले के साथ उस वक़्त तक तशरीफ़ फ़रमा रहते जब तक वोह ख़ुद न चला जाए ۞ जब किसी से मुसा-फ़ह़ा फ़रमाते (या'नी हाथ मिलाते) तो अपना हाथ खींचने में पहल न फ़रमाते ۞ साइल (या'नी मांगने वाले) को अ़त़ा फ़रमाते ۞ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की सख़ावत व ख़ुश ख़ुल्क़ी हर एक के लिये आ़म थी ۞ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मजलिस इ़ल्म, बुर्द-बारी, ह़या, सब्र और अमानत की मजलिस थी ۞ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मजलिस में शोरो ग़ुल होता न किसी की तज़्लील (या'नी बे इ़ज़्ज़ती) ۞ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की मजलिस में अगर किसी से कोई भूल हो जाती तो उस को शोहरत न दी जाती[1] ۞ जब किसी की त़रफ़ मु-तवज्जेह होते तो मुकम्मल तवज्जोह फ़रमाते[2] ۞ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم किसी के चेहरे पर नज़रें न गाड़ते थे[3] ۞ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم कुंवारी लड़की से भी ज़ियादा बा ह़या थे[4] ۞ सलाम में पहल फ़रमाते[5] ۞ बच्चों को भी सलाम करते ۞ जो आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को पुकारता, जवाब में ''लब्बैक'' (या'नी मैं ह़ाज़िर हूं) फ़रमाते[6] ۞ अहले मजलिस की त़रफ़ पाउं न फैलाते ۞ अक्सर क़िब्ला रू बैठते ۞ अपनी ज़ात के लिये कभी किसी से बदला न लेते ۞ बुराई का बदला बुराई से देने के बजाए मुआ़फ़ फ़रमा दिया करते[7] ۞ राहे ख़ुदा عَزَّوَجَلَّ में जिहाद के सिवा कभी किसी को अपने मुबारक हाथ से न मारा, न किसी ग़ुलाम को न ही किसी औ़रत

مدینہ

۱ شمائل ترمذی ص۱۹۲۔۱۹۳وغیرہ مُلَخَّصاً۔ ۲ شُعَبُ الْإِيمان حديث ١٤٣٠۔ ۳ إِحياءُ الْعُلوم ج ٢ ص ٤٤٢۔ ٤ شمائل ترمذی ص۲۰۳۔ ٥ شُعَبُ الْإِيمان حديث ١٤٣٠۔ ٦ وسائل الوصول ص۲۰۷۔ ٧ إِحياءُ الْعُلوم ج ٢ ص ٤٤٨، ٤٤٩۔

www.dawateislami.net

(या'नी ज़ौजा वग़ैरा) को मारा[1] ۞ गुफ़्त-गू में नरमी होती,[2] आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''**अल्लाह तआ़ला** के नज़्दीक बरोज़े क़ियामत लोगों में सब से बुरा वोह है जिस को उस की बद कलामी की वज्ह से लोग छोड़ दें''[3] ۞ आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم बात करते तो (इस क़दर ठहराव होता कि) लफ़्ज़ों को गिनने वाला गिन सकता था[4] ۞ त़बीअ़त में नरमी थी और हश्शाश बश्शाश रहते ۞ न चिल्लाते ۞ सख़्त गुफ़्त-गू न फ़रमाते ۞ किसी को ऐब न लगाते ۞ बुख़्ल न फ़रमाते ۞ अपनी ज़ाते वाला को बिल ख़ुसूस तीन चीज़ों, झगड़े, तकब्बुर और बेकार बातों से बचा कर रखते ۞ किसी का ऐब तलाश न करते ۞ सिर्फ़ वोही बात करते जो (आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़क़ में) बाइ़से सवाब हो ۞ मुसाफ़िर या अजनबी आदमी के सख़्त कलामी भरे सुवाल पर भी सब्र फ़रमाते ۞ किसी की बात को न काटते अलबत्ता अगर कोई ह़द से तजावुज़ करने लगता तो उस को मन्अ़ फ़रमाते या वहां से उठ जाते[5] ۞ सा-दगी का आ़लम येह था कि बैठने के लिये कोई मख़्सूस जगह भी न रखी थी[6] ۞ कभी चटाई पर तो कभी यूं ही ज़मीन पर भी आराम फ़रमा लेते[7] ۞ कभी क़ह्क़हा (या'नी इतनी आवाज़ से हंसना कि दूसरे लोग हों तो सुन लें) न लगाते[8] ۞ सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان फ़रमाते हैं : आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सब से ज़ियादा मुस्कुराने वाले थे (या'नी मौक़अ़ की मुना-सबत से)[9] ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन ह़ारिस رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं कि मैं ने **रसूलुल्लाह** صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से ज़ियादा मुस्कुराने वाला कोई नहीं देखा ।[10]

مدینہ

[1] شمائل ترمذی ص ۱۹۷۔ [2] اِحیاءُ الْعُلوم ج ۲ ص ۴۵۱ ۔ [3] مُسلِم ص ۱۳۹۸ حدیث ۲۵۹۱ ۔ [4] بخاری حدیث ۳۵۶۷
[5] شمائل ترمذی ص ۱۹۹۔۲۰۰ مُلَخَّصاً۔ [6] اَخلاقُ النّبی وآدابہ ص ۱۵۔ [7] وسائل الوصول ص ۱۸۹۔
[8] اِحیاءُ الْعُلوم ج ۲ ص ۴۴۶ ۔ [9] اِحیاءُ الْعُلوم ج ۲ ص ۴۵۳ ۔ [10] شمائل ترمذی ص ۱۳۶۔

www.dawateislami.net

या इलाही ! जब बहें आंखें ह़िसाबे जुर्म में

उन तबस्सुम रेज़ होंटों की दुआ़ का साथ हो

(ह़दाइके़ बख़्शिश शरीफ़)

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! बयान को इख़्तिताम की त़रफ़ लाते हुए **सुन्नत** की फ़ज़ीलत और चन्द सुन्नतें और आदाब बयान करने की सआ़दत ह़ासिल करता हूं। ताजदारे रिसालत, शहन्शाहे नुबुव्वत, मुस्त़फ़ा जाने रह़मत, शम्ए बज़्मे हिदायत, नोशए बज़्मे जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस ने मेरी सुन्नत से मह़ब्बत की उस ने मुझ से मह़ब्बत की और जिस ने मुझ से मह़ब्बत की वोह जन्नत में मेरे साथ होगा। (ابنِ عَساکِر ج٩ ص٣٤٣)

सीना तेरी सुन्नत का मदीना बने आक़ा

जन्नत में पड़ोसी मुझे तुम अपना बनाना

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

"क़त़ए रेह़्मी ह़राम है" के 13 ह़ुरूफ़ की निस्बत से सिलए रेह़्मी के 13 म-दनी फूल

۞ **फ़रमाने इलाही** عَزَّوَجَلَّ : وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِیْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ط[1]

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "और **अल्लाह** से डरो, जिस के नाम पर मांगते हो और रिश्तों का लिह़ाज़ रखो।" इस आयते मुबा-रका के तह़्त "तफ़्सीरे मज़्हरी" में है : या'नी तुम क़त़ए रेह़्म (या'नी रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ तोड़ने) से बचो[2] ۞ **7 फ़रामीने मुस्त़फ़ा** صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

مدینہ

[1] پ٤، النّسآء:١ـ [2] تفسیرِ مظھری ج٢ ص٣ـ

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم **:** जिस के पास मेरा ज़िक्र हुवा और उस ने मुझ पर दुरूदे पाक न पढ़ा तह़क़ीक़ वोह बद बख़्त हो गया। (ابن سنی)

﴾1﴿ जो **अल्लाह** और क़ियामत पर ईमान रखता है उसे चाहिये कि **सिलए रेह़मी** करे[1] ﴾2﴿ क़ियामत के दिन **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के अ़र्श के साए में तीन क़िस्म के लोग होंगे, (उन में से एक है) सिलए रेह़मी करने वाला[2] ﴾3﴿ रिश्ता काटने वाला जन्नत में नहीं जाएगा[3] ﴾4﴿ लोगों में से वोह शख़्स सब से अच्छा है जो कसरत से कुरआने करीम की तिलावत करे, ज़ियादा मुत्तक़ी हो, सब से ज़ियादा नेकी का हुक्म देने और बुराई से मन्अ़ करने वाला हो और सब से ज़ियादा **सिलए रेह़मी** (या'नी रिश्तेदारों के साथ अच्छा बरताव) करने वाला हो[4] ﴾5﴿ बेशक अफ़्ज़ल तरीन स–दक़ा वोह है जो दुश्मनी छुपाने वाले रिश्तेदार पर किया जाए[5] ﴾6﴿ जिस क़ौम में क़ात़ेए़ रेह़म (या'नी रिश्तेदारी तोड़ने वाला) हो, उस क़ौम पर **अल्लाह** की रह़मत का नुज़ूल नहीं होता[6] ﴾7﴿ जिसे येह पसन्द हो कि उस के लिये (जन्नत में) मह़ल बनाया जाए और उस के द–रजात बुलन्द किये जाएं, उसे चाहिये कि जो इस पर ज़ुल्म करे येह उसे मुआ़फ़ करे और जो इसे मह़रूम करे येह उसे अ़त़ा करे और जो इस से क़त़ए़ तअ़ल्लुक़ करे येह उस से नात़ा (या'नी तअ़ल्लुक़) जोड़े **(اَلْمُستَدرَك ج٣ ص١٢ حديث ٣٢١٥)** ۞ ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस समर क़न्दी عَلَیْہِ رَحمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं, सिलए रेह़मी करने के **10** फ़ाएदे हैं **:** **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल होती है, लोगों की ख़ुशी का सबब है, फ़िरिश्तों को मसर्रत होती है, मुसल्मानों की त़रफ़ से उस शख़्स की ता'रीफ़ होती है, शैत़ान को इस से रन्ज पहुंचता है, उ़म्र बढ़ती है, रिज़्क़ में ब–र–कत होती है, फ़ौत हो जाने वाले आबाओ अज्दाद (या'नी

١: بخارى ٤ ص١٣٦ حديث ٦١٣٨ ٢: اَلْفِردَوس بمأثور الْخِطاب ج٢ ص٩٩ حديث٢٥٢٦ - ٣: بُخارى ج٤ ص٩٧ حديث٥٩٨٤ - ٤: مُسندِ اِمام احمد ج١٠ ص٤٠٢ حديث٢٧٥٠٤ - ٥: ايضاً ج٩ ص١٣٨ حديث٢٣٥٨٩ - ٦: اَلزَّواجِر ج٢ ص١٥٣

www.dawateislami.net

मुसल्मान बाप दादा) ख़ुश होते हैं, आपस में मह़ब्बत बढ़ती है, वफ़ात के बा'द उस के सवाब में इज़ाफ़ा हो जाता है, क्यूं कि लोग उस के ह़क़ में दुआए ख़ैर करते हैं (تَنبِيهُ الغافِلين ص٧٣) ۞ **दा'वते इस्लामी** के इशाअ़ती इदारे **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ 1196 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **''बहारे शरीअ़त''** जिल्द 3 सफ़ह़ा 558 ता 560 पर है **:** **सिलए रेह़्म** के मा'ना **रिश्ते को जोड़ना** है या'नी रिश्ते वालों के साथ नेकी और सुलूक करना। सारी उम्मत का इस पर इत्तिफ़ाक़ है कि **सिलए रेह़्म** ''वाजिब'' है और क़त़्ए रेह़्म (या'नी रिश्ता तोड़ना) ''ह़राम'' है। जिन रिश्ते वालों के साथ सिलए (रेह़्म) वाजिब है वोह कौन हैं ? बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया **:** वोह **ज़ू रेह़्म मह़रम** हैं और बा'ज़ ने फ़रमाया **:** इस से मुराद ज़ू रेह़्म हैं, मह़रम हों या न हों। और ज़ाहिर येही क़ौले दुवुम है, **अह़ादीस** में मुत़्लक़न (या'नी बिग़ैर किसी क़ैद के) रिश्ते वालों के साथ सिला (या'नी सुलूक) करने का हुक्म आता है, क़ुरआने मजीद में मुत़्लक़न (या'नी बिला क़ैद) ज़विल क़ुर्बा (या'नी क़राबत वाले) फ़रमाया गया मगर येह बात ज़रूर है कि रिश्ते में चूंकि मुख़्तलिफ़ द-रजात हैं (इसी त़रह़) सिलए रेह़्म (या'नी रिश्ते दारों से ह़ुस्ने सुलूक) के द-रजात में भी तफ़ावुत (या'नी फ़र्क़) होता है। वालिदैन का मर्तबा सब से बढ़ कर है, इन के बा'द ज़ू रेह़्म मह़रम का, (या'नी वोह रिश्तेदार जिन से न-सबी रिश्ता होने की वज्ह से निकाह़ हमेशा के लिये ह़राम हो) इन के बा'द बक़िय्या रिश्ते वालों का अ़ला क़दरे मरातिब। (या'नी रिश्ते में नज़्दीकी की तरतीब के मुत़ाबिक़) (رَدُّالمُحتار ج٩ص٦٧٨) ۞ **सिलए** रेह़्मी (या'नी रिश्तेदारों के साथ सुलूक) की मुख़्तलिफ़ सूरतें हैं, इन को हदिय्या व तोह़फ़ा देना और अगर इन को

किसी बात में तुम्हारी इआ़नत (या'नी इमदाद) दरकार हो तो इस काम में उन की मदद करना, उन्हें सलाम करना, उन की मुलाक़ात को जाना, उन के पास उठना बैठना, उन से बातचीत करना, उन के साथ लुत़्फ़ो मेह्रबानी से पेश आना (دُرَر ج۱ ص۳۲۳) ۞ अगर येह शख़्स परदेस में है तो रिश्ते वालों के पास ख़त़ भेजा करे, उन से ख़त़ो किताबत जारी रखे ताकि बे तअ़ल्लुक़ी पैदा न होने पाए और हो सके तो वत़न आए और रिश्तेदारों से तअ़ल्लुक़ात ताज़ा कर ले, इस त़रह़ करने से मह़ब्बत में इज़ाफ़ा होगा। (رَدُّالْمُحتار ج۹ ص۶۷۸) (फ़ोन या इन्टरनेट के ज़रीए़ भी राबित़े की तरकीब मुफ़ीद है) ۞ सिलए रेह़मी (रिश्तेदारों के साथ अच्छा सुलूक) इसी का नाम नहीं कि वोह सुलूक करे तो तुम भी करो, येह चीज़ तो ह़क़ीक़त में मुकाफ़ात या'नी अदला बदला करना है कि उस ने तुम्हारे पास चीज़ भेज दी तुम ने उस के पास भेज दी, वोह तुम्हारे यहां आया तुम उस के पास चले गए। ह़क़ीक़तन **सिलए रेह़म** (या'नी कामिल द-रजे का सिलए रेह़म) येह है कि वोह काटे और तुम जोड़ो, वोह तुम से जुदा होना चाहता है, बे ए'तिनाई (या'नी ला परवाही) करता है और तुम उस के साथ रिश्ते के ह़ुक़ूक़ की मुराआ़त (या'नी लिह़ाज़ व रिआ़यत) करो। (ایضاً)

ह़ज़ारों सुन्नतें सीखने के लिये **मक-त-बतुल मदीना** की मत़्बूआ़ दो कुतुब (1) **312** सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **"बहारे शरीअ़त"** ह़िस्सा **16** और (2) **120** सफ़ह़ात की किताब **"सुन्नतें और आदाब"** ह़दिय्यतन ह़ासिल कीजिये और पढ़िये। सुन्नतों की तरबिय्यत का एक बेहतरीन ज़रीआ़ **दा'वते इस्लामी** के **म-दनी क़ाफ़िलों** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ सुन्नतों भरा सफ़र भी है।

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुझ पर रोज़े जुमुआ़ दुरूद शरीफ़ पढ़ेगा मैं क़ियामत के दिन उस की शफ़ाअ़त करूंगा । (جمع الجوامع)

लूटने रह़मतें क़ाफ़िले में चलो सीखने सुन्नतें क़ाफ़िले में चलो
होंगी ह़ल मुश्किलें क़ाफ़िले में चलो ख़त्म हों शामतें क़ाफ़िले में चलो

صَلُّوْا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

ग़मे मदीना, बक़ीअ़,
मग़्फ़िरत और बे
ह़िसाब जन्नतुल
फ़िरदौस में आक़ा
के पड़ोस का त़ालिब

10 स-फ़रुल मुज़फ़्फ़र 1436 सि.हि.
03-12-2014

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में **मक-त-बतुल मदीना** के शाएअ़ कर्दा रसाइल और म-दनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या म-दनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये ।

مآخذ و مراجع

کتاب	مطبوعہ	کتاب	مطبوعہ
قرانِ مجید		مجمع الزوائد	دار الفکر بیروت
تفسیرِ مظہری	کوئٹہ	کنز العمال	دار الکتب العلمیۃ بیروت
تفسیرِ نعیمی	مکتبہ اسلامیہ مرکز الاولیاء لاہور	شمائل ترمذی	دار احیاء التراث العربی بیروت
بخاری	دار الکتب العلمیۃ بیروت	وسائل الوصول	دار المنہاج جدۃ
مسلم	دار ابن حزم بیروت	اخلاق النّبی وآدابہ	دار الکتاب العربی بیروت
ابوداؤد	دار احیاء التراث العربی بیروت	ابن عساکر	دار الفکر بیروت
ترمذی	دار الفکر بیروت	خلاصۃ سیر سید البشر	دائرۃ المعارف العثمانیۃ، الہند
ابن ماجہ	دار المعرفۃ بیروت	تنبیہ الغافلین	دار الکتاب العربی بیروت
مسند امام احمد	دار الفکر بیروت	احیاء العلوم	دار صادر بیروت
معجم اوسط	دار الکتب العلمیۃ بیروت	الزواجر	دار المعرفۃ بیروت
شعب الایمان	دار الکتب العلمیۃ بیروت	درر	باب المدینہ کراچی
مستدرک	دار المعرفۃ بیروت	درمختار وردالمحتار	دار المعرفۃ بیروت
شرح السنۃ	دار الکتب العلمیۃ بیروت	فتاوٰی رضویہ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیاء لاہور
الفردوس بماثور الخطاب	دار الکتب العلمیۃ بیروت	بہار شریعت	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی

www.dawateislami.net

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : बरोज़े क़ियामत लोगों में से मेरे क़रीब तर वोह होगा जिस ने दुन्या में मुझ पर ज़ियादा दुरूदे पाक पढ़े होंगे। (ترمذی)

फ़ेहरिस

उ़न्वान	सफ़हा	उ़न्वान	सफ़हा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	1	नमक ज़ियादा डाल दिया	14
खोटा सिक्का	1	शोहर के हुक़ूक़	15
दा'वते इस्लामी क्या चाहती है ?	2	शोहर का घर न छोड़े	16
तीन शख़्स जन्नत से (इब्तिदाअन) महरूम	3	अक्सर औ़रतें जहन्नमी होने का सबब	16
दय्यूस की ता'रीफ़	3	पड़ोसियों की अहम्मिय्यत	17
मर्दाना लिबास वाली जन्नत से महरूम	5	आ'ला किरदार की सनद	17
बड़े भाई का एहतिराम	5	अमीरे क़ाफ़िला कैसा हो ?	18
औलाद को अदब सिखाइये	6	बची हुई चीज़ें दूसरों को देने की तरग़ीब	18
घरों में म-दनी माहोल न होने की एक वज्ह	7	मा तहूतों के बारे में सुवाल होगा	18
अहले ख़ाना को दोज़ख़ से कैसे बचाएं ?	7	कामों की तक़्सीम	19
रिश्तेदारों का एहतिराम	8	दूसरों को अपनी निशस्त पर जगह दीजिये	20
रिश्तेदारों से हुस्ने सुलूक के म-दनी फूल	8	म-दनी क़ाफ़िले में सफ़र कीजिये	21
सिलए रेहमी के मा'ना	8	ज़ियादा जगह न घेरिये	21
किन रिश्तेदारों से सिला वाजिब है ?	9	आने वाले के लिये सरक्ना सुन्नत है	22
"ज़ू रेहम महरम" और "ज़ू रेहम" से मुराद ?	9	दूसरों से छुपा कर बात करना	23
रिश्तेदार दूसरे मुल्क में हों तो क्या करे ?	11	गरदन फलांगना	23
क़त्एु रेहम की एक सूरत	11	दो के बीच में घुसना	24
सिलए रेहम येह है कि वोह तोड़े तब भी तुम जोड़ो	11	सफ़ में चादर रख कर जगह रोकना	25
		दिल न दुखाइये	26
नाराज़ रिश्तेदारों से सुल्ह कर लीजिये	12	उस्वए ह-सना	26
यतीम के सर पर हाथ फेरने की फ़ज़ीलत	12	अख़्लाक़े मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की झल्कियां	27
औ़रत से निभाने की कोशिश कीजिये	13		
ज़ौजा के साथ नरमी की फ़ज़ीलत	14	सिलए रेहमी के 13 म-दनी फूल	30
औ़रत के साथ दर गुज़र का मुआ़-मला रखिये	14	मआख़िज़ो मराजेअ़	34

www.dawateislami.net

मुसल्मान को महब्बत से देखने का सवाब

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : जो मुसल्मान अपने भाई से मुसा-फ़हा करे और किसी के दिल में दूसरे से अ़दावत न हो तो हाथ जुदा होने से पहले **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ दोनों के गुज़श्ता गुनाहों को बख़्श देगा और जो कोई अपने मुसल्मान भाई की त़रफ़ **महब्बत** भरी नज़र से देखे और उस के दिल में कीना न हो तो निगाह लौटने से पहले दोनों के पिछले गुनाह बख़्श दिये जाएंगे। (کنزُالعُمّال ج ۹ ص ۵۷ حدیث ۲۵۳۵۸)

मुम्बई : 19, 20, मुहम्मद अ़ली रोड, मांडवी पोस्ट ऑफ़िस के सामने, मुम्बई फ़ोन : 022-23454429
देहली : 421, मटिया महल, उर्दू बाज़ार, जामेअ़ मस्जिद, देहली फ़ोन : 011-23284560
नागपूर : ग़रीब नवाज़ मस्जिद के सामने, सैफ़ी नगर रोड, मोमिन पुरा, नागपूर : (M) 09373110621
अजमेर शरीफ़ : 19/216 फ़्लाहे दारैन मस्जिद, नाला बाज़ार, स्टेशन रोड, दरगाह, अजमेर फ़ोन : 0145-2629385
हैदराबाद : पानी की टंकी, मुग़ल पुरा, हैदराबाद फ़ोन : 040-24572786
हुब्ली : A.J. मुढोल कोम्पलेक्ष, A.J. मुढोल रोड, ओल्ड हुब्ली ब्रीज के पास, हुब्ली, कर्नाटक. फ़ोन : 08363244860

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी

फ़ैज़ाने मदीना, त्री कोनिया बग़ीचे के सामने, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net